विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

ऑनलाईन गेमिंग के जाल में फंसते लोग

लाख प्रयासों के बावजूद देश में ऑनलाईन गेमिंग का बाजार थमना तो दूर की बात है बल्कि दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ता ही जा रहा है। पिछले एक साल में ही ऑनलाईन गेमिंग के मैदान में पांच करोड़ नए लोगों ने एंट्री ले ली है। 2021 में देश में ऑनलाईन गेम खेलने वालों की संख्या करीब 45 करोड़ थी जो 2022 में बढ़कर 50 करोड़ का आंकड़ा पार कर गई है। यह अपने आप में चितनीय इसलिए भी हो जाता है कि क्या युवा और क्या बच्चें इस ऑन लाईन गेम और गेंबलिंग के जाल में फंसते जा रहे हैं। जानकारों की माने तो कयास यह लगाया जा रहा है कि 2025 तक यह संख्या 50 करोड़ से 70 करोड़ तक पहुंच जाएगी। तस्वीर का नकारात्मक पहलू यह भी है कि ऑनलाईन गेमिंग के इस खेल में बच्चें तेजी से फंसते जा रहे हैं।

मजे की बात यह है कि ऑनलाईन गेमिंग व गेंबलिंग के दुष्प्रभाव को जानते पहचानते भी प्रतिदिन नए लोग फंसते जा रहे हैं वहीं समाचारपत्रों के मुखपृष्ठ पर फुलपेज के विज्ञापन प्रमुखता से छपने लगे हैं तो सोशियल मीडिया का भी इसको प्रमोट करने के लिए धड्डले से उपयोग हो रहा है। 2016 में देश में ऑनालाईन गेमिंग का 54 करोड़ डालर का कारोबार था जो अब बढ़कर 2022 में 2 अरब 60 करोड़ डालर को पार कर गया हैं वहीं जानकारों की माने तो 2027 तक चार गुणा ग्रोथ के साथ 8 अरब डॉलर तक पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। दरअसल कोरोना के लॉकडाउन के दौर के बाद इसमें तेजी से विस्तार हुआ है। बच्चे जहां ऑनलाईन क्लासों के कारण इसकी चपेट में आ गए वहीं युवा लोग वर्क फार्म होम के दौरान लुभावनें विज्ञापनों के चक्कर में इसकी चपेट में आ गए हैं। देखा जाए तो उत्तप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, बिहार और पश्चिमी बंगाल के लोग इसके दायरें में अधिक है।

दरअसल ऑनलाईन गेम एप संचलित करने वालों का दावा है कि वे तो कौशल विकास के लिए इस तरह के गेम चलाते हैं पर वास्तविकता तो यह है कि अधिकांश गेमिंग पोर्टल गेंबलिंग यानी की जुआ ही है। और यह होती आई बात है कि एक बार जो जुआ या यों कहें कि गेंबलिंग के चक्रव्यूह में फंस जाता है ता उससे निकलना बहुत मुश्किल भरा काम है। मजे की बात यह है कि अधिकांश खेलों में जीतने वाले को जो पैसा दिया जाने का दावा किया जाता है वह नहीं मिलता और या तो कोई तकनीकी बाधा हो जाती है या फिर नंबर ब्लाक कर इस तरह के पोर्टल संचालित करने वाले पैसा हजम कर जाते हैं और इस तरह की गेमिंग में फंसने वाला अपने आप को ठगा हुआ महसूस करता है। यहां तक कि इसके चक्कर में युवा, बच्चे आदि अपनी बचत को तो खोते ही हैं साथ ही अनेक लोग कर्ज के जाल में और फंस जाते हैं। डिप्रेशन में आना और कुंठित व तनावग्रस्त होना तो सामान्य बात ही है। यही कारण है कि अधिकांश राज्य सरकारें ऑनलाईन गेमिंग पर रोक लगाने की पक्षधर है।

कोई तीन दशक पहले कई राज्य सरकारों द्वारा लॉटरी चलाई जा रही थी। सुबह से टिकटों की बिक्री शुरु होती थी, लोगों की भीड़ जुटी रहती थी। जो दिन में लॉटरी खुलने तक जारी रहती थी। पर जब अति होने लगी, समाज बुरी तरह से प्रभावित होने लगा तो सरकार ने एक ही झटके में समूचे देश से लॉटरी व्यवस्था समाप्त कर दी और इसके सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त हुए। इसी तरह से केन्द्र व राज्य सरकारों को ऑनलाईन गेमिंग व्यवस्था पर अंकुश लगाने के ठोस प्रयास करने होंगे।

ऑनलाईन गेमिंग के इस नेटवर्क का अंदाज इसी से आसानी से लगाया जा सकता है कि एक मोटे अनुमान के अनुसार देश में 900 गेमिंग कंपनियां कार्य कर रही है। नित नए गेम बनाकर उतार रही है। अकेले 2022 में ही 15 अरब नए गेम डाउनलोड किए गए। इससे स्वाभाविक रुप से अंदाज लगाया जा सकता है कि ऑनलाईन गेमिंग का कारोबार कितना बड़ा और दिन दूनी रात चौगुनी गति से विस्तारित हो रहा है। ऑनलाईन गेमिंग के जाल में फंसें लोगों से इसका चस्का छूटना मुश्किल भरा काम है। इससे जुड़े लोग 24 घंटें में से 8 घंटे से भी अधिक का समय इस गेमिंग में खपा देते हैं। यह अपने आप में बड़ी बात है।

मजे की बात यह है कि इतना सब कुछ होने के बाद भी इस पर प्रभावी रोक के कोई सार्थक प्रयास नहीं हो रहे हैं। हांलाकि तथाकथित कौशल वाले इन खेलों पर सरकार ने 18 प्रतिशत जीएसटी लगा रखी है। पर यह कोई समस्या का समाधान नहीं है। हांलाकि सरकारों की ईच्छा शक्ति पर बहुत कुछ निर्भर करता है। यही कोई तीन दशक पहले कई राज्य सरकारों द्वारा लॉटरी चलाई जा रही थी। जो आते आते एक नंबर पर आ गई और इसका नेटवर्क इस कदर फैला हुआ था कि सरकार दफ्तरों के बाहर तक टेबल कुर्सी पर सुबह से टिकटों की बिक्री शुरु होती थी जो दिन में लॉटरी खुलने तक जारी रहती थी। लोगों की भीड़ जुटी रहती थी। पर जब अति होने लगी, समाज बुरी तरह से प्रभावित होने लगा तो सरकार ने एक ही झटके में समूचे देश से लॉटरी व्यवस्था समाप्त कर दी और इसके सकारात्मक परिणाम भी प्राप्त हुए।

इसी तरह से केन्द्र व राज्य सरकारों को ऑनलाईन गेमिंग व्यवस्था पर अंकुश लगाने के ठोस प्रयास करने होंगे। कम से कम इस तरह की कंपनियों द्वारा की जा रही चिटिंग व लोगों को सब्जबाग दिखा कर लुभाने के प्रयासों को तक प्रतिबंधित करना ही होगा। खासतौर से इस तरह के नियामक कानून बनाने होंगे जिससे बच्चें तो इस चंगुल में नहीं फंस सके और नियंत्रित किया जा सके। इन कंपनियों की गतिविधियों पर नजर रखने और उसके लिए नियामक संस्था बनाने के कदम उठाये जाने चाहिए। सरकार केा इसके लिए समय रहते कदम उठाने होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 20 अप्रैल, 2023

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, अश्विनी नक्षत्र रात्रि 11:10 तक, विष्कुम्भ योग दिन 1:00 तक, नाग करण प्रातः 9:42 तक, चन्द्रमा मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मेष, चन्द्रमा–मेष, मंगल–मिथुन, बुध–मेष, गुरू–मीन, शुक्र–वृष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज श्री शुकदेव जयन्ती और देव अमावस्या है। आज सूर्य सायन वृष में सूर्य दिन 1:45 पर प्रवेश करेगा। आज सौर ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होगी।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:30 तक, चर 10:50 से 12:27 तक, लाभ–अमृत 12:27 से 3:38 तक, शुभ 5:15 से 6:1 तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 6:49

मेष

मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

सिंह

शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। मन में असंतोष और भय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय बना रहेगा। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

मकर

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला

व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा।

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण मामलों में परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

वृश्चिक

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

मीन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

"मन की बात" की शक्तिः समावेशिता और पहुंच की दिशा में भारत की यात्रा का निर्धारण

2015 में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' के श्रोताओं के लिए एक अनूठा सुझाव दिया था– ;मैंने सोचा था कि हम लोगों को विकलांग कहते हैं या जानते हैं क्योंकि उनके शरीर की संरचना में कुछ कमी है या जिनके अंग सही से काम नहीं करते हैं। हालांकि, जब हम उनके साथ बातचीत करते हैं, तो हमें पता चलता है कि ... भगवान ने उन्हें कुछ अलग शक्ति प्रदान की है जिसे हम अपनी आंखों से नहीं देख सकते हैं, लेकिन जब हम उन्हें काम करते हुए देखते हैं तो हमें उनकी प्रतिभा का एहसास होता है।

इसलिए, मैंने सोचा कि क्यों न हमारे देश में 'विकलांग' के बजाय 'दिव्यांग' शब्द का इस्तेमाल किया जाए। यह अक्षमता के क्षेत्र में समावेशिता और पहुंच की दिशा में एक क्रांतिकारी दृष्टिकोण की शुरुआत थी और मैं विश्वास के साथ कह सकती हूं कि यह इस माध्यम की शक्ति है, जिसे प्रधानमंत्री ने महसूस किया है और आत्मसात किया है। इस क्षेत्र के साथ मेरे 3 दशकों से अधिक के जुड़ाव और खुद व्हील चेयर पर होने के कारण, मैंने देखा है कि जब दिव्यांगजनों की बात आती है तो राष्ट्र के सामने कुछ गंभीर चुनौतियां होती हैं, जिनमें से तीन– अनुत्पादकता, शिक्षा और पहुंच सबसे महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, पिछले एक दशक में, हमारे प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व में देश में एक आदर्श बदलाव देखा गया है। 'सबका साथ, सबका विकास' की दृष्टि से, 3 दिसंबर, 2015 को सुगम्य भारत अभियान का शुभारंभ, विकलांग व्यक्तियों को जीवन के सभी पहलुओं में स्वतंत्र रूप से भाग लेने के लिए समान अवसर प्रदान करने की दिशा में उठाया गया एक आवश्यक कदम था।

लेकिन सरकार की इस नीति के साथ–साथ, ऐसे लोगों के इर्द–गिर्द की कहानी में बदलाव की पहल करना भी उतना ही आवश्यक था या जैसा कि मैं इसे ;व्यवहार परिवर्तन के लिए जन समर्थन; कहना चाहती हूं।

उस रेडियो संबोधन के सात साल बाद आज समाज में विकलांग व्यक्तियों के प्रति लोगों के नजरिए में बदलाव साफ नजर आ रहा है। 'मन की बात' हमारे प्रधानमंत्री को सीधे जनता से जोड़ती है जहां वे इस मुद्दे पर विस्तार से बोलते हैं और इससे व्यक्तियों और संगठनों को अपने–अपने क्षेत्रों में अधिक काम करने की ऊर्जा मिलती है। इसने सभी क्षेत्रों में विकलांग व्यक्तियों के बारे में सार्वजनिक धारणा को बदलने में मदद की है, चाहे वह मीडिया, शिक्षा या खेल हो, जिसके लिए कई पैरालंपियनों ने प्रधानमंत्री को धन्यवाद भी दिया है। नवप्रवर्तन के लिए विचारों को आमंत्रित करने से लेकर, जो दिव्यांगजनों को उनके लिए मौजूदा पहलों और नीतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं, प्रधानमंत्री इस महत्वपूर्ण विषय पर प्रकाश डालने के लिए अक्सर 'मन की बात' के मंच का उपयोग करते हैं। यहां तक कि देश में की जा रही छोटी से छोटी अभिनव और प्रेरक पहल को भी उनके द्वारा अपने रेडियो संबोधन में सामने लाया जाता है। उदाहरण के लिए मस्कुलर डिस्ट्रॉफी का उदाहरण लें, एक वंशानुगत विकार जो मांसपेशियों के द्रव्यमान के क्रमिक नुकसान का कारण बनता है, जिसे 27 नवंबर, 2022 को प्रसारित 'मन की बात' के 95वें एपिसोड

में हाइलाइट किया गया था, जहां प्रधानमंत्री ने हमारे संस्थान इंडियन एसोसिएशन ऑफ मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के बारे में बात की थी जिसने बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाने में अद्भुत काम किया था। हालांकि अभी लंबा रास्ता तय करना है, लेकिन विकलांग व्यक्तियों के जीवन और अधिकारों में नई दिलचस्पी हमें सफलता की नई ऊंचाइयों तक ले जाएगी।

यह परिवर्तनकारी 'मन की बात' कार्यक्रम 30 अप्रैल, 2023 को 100 एपिसोड के एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंच रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह मंच आने वाले समय में भी समावेशी भारत के सपने को साकार करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा। कुछ महत्वपूर्ण विषय जिनमें अधिक जागरूकता की आवश्यकता है, वे हैं 'यूनिवर्सल डिजाइन' ताकि दिव्यांगजनों तक पहुंच बढ़ाई जा सके, कार्यस्थल में दिव्यांगजनों के लिए एक समान अवसर बनाने के लिए 'समुचित समायोजन' का दृष्टिकोण, और संभावित स्टार्टअप और इनोवेटर्स के लिए बाजार पहुंच के पर्याप्त अवसर को बढ़ावा देना सहायक टच (एटी) क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए इसकी मांग बढ़ रही है।

;एक पृथ्वी – एक परिवार – एक भविष्य; विषय के साथ जी20 में भारत की अध्यक्षता प्रगति और विकास के आसपास की चर्चाओं में विकलांग व्यक्तियों को शामिल करने को प्राथमिकता देने का अवसर प्रस्तुत करती है। यह भारत को समावेशिता और पहुंच को बढ़ावा देने में एक वैश्विक पथ प्रदर्शक के रूप में स्थापित करेगा, क्योंकि अपनी शताब्दी वर्ष की ओर अठासर भारत के लिए यह एक महान लक्ष्य है।

इसके लिए, यह सुझाव दिया जाता है कि साल भर चलने वाले अभियान को लागू किया जाए, जिसमें हर महीने की 11 तारीख को ;विकलांगता के लिए विशेष दिन; के रूप में नामित किया जाता है। यह दिन विकलांग व्यक्तियों को नौकरियों की पेशकश, साहस और पहल की कहानियों को साझा करने और इस विचार को शुरू करने के लिए 'मन की बात' का बेहतर मंच के रूप में जश्न मनाने और समर्थन करने का अवसर होगा। सांकेतिक तिथि के रूप में 11 का चुनाव इस अवधारणा को दर्शाता है कि छोटे प्रयास जब संयुक्त होते हैं तो महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार, विकलांगता अधिकारों और समावेशन को बढ़ावा देने के लिए हर योगदान मूल्यवान है और इसे स्वीकार किया जाना चाहिए। मैं 'मन की बात' की आगामी 100वीं कड़ी और राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न मुद्दों पर हमारे प्रधानमंत्री के ज्ञान के शब्दों को सुनने के लिए उत्सुक हूं। मुझे विश्वास है कि सरकार द्वारा हम सबमें 'कर सकते हैं' की भावना जगाने वाले कदमों की चर्चा 'मन की बात' में और उसके माध्यम से होती रहेगी, ताकि पूरा देश समावेशी भारत के निर्माण के लिए उत्साह, प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए 'पंच प्राण' को पूरा करते हुए, इससे ओत–प्रोत हो सके, क्योंकि हम 'अमृत काल' में प्रवेश कर चुके हैं।

लेखिका का नोटः राष्ट्रीय दिव्यांगजन रोजगार संवर्धन केंद्र से इनपुट

– संजना गोयल,
अध्यक्ष, इंडियन एसोसिएशन ऑफ मस्कुलर डिस्ट्रॉफी

108 कुण्डीय श्री महालक्ष्मी गणेश महायज्ञ में अब तक दी जा चुकी हैं 10 लाख आहुतियाँ

जयपुर, (निसं)। ग्राम रूण्डल स्थित जमदग्नि परशुराम रेणुका आश्रम में सृष्टि के कल्याणार्थ महंत रविदास महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित 108 कुण्डीय श्री महालक्ष्मी गणेश महायज्ञ में अब तक लगभग 10 लाख आहुतियां दी जा चुकी हैं।

अयोध्या धाम से पधारे यज्ञाचार्य महंत गणेश दास महाराज ने बताया कि यज्ञ समस्त भुवनों का नाभि (केन्द्र) स्थान है। यज्ञ के द्वारा साधक देवताओं को प्रसन्न करतें है और देवता प्रसन्न होकर साधक को मनोवांछित फल प्रदान करतें है।

■ **सेवा से बढ़कर दूसरा कोई सतकर्म नहीं हैः रविदास महाराज**

महायज्ञ के संयोजक रविदास महाराज ने बताया कि सेवा से बढ़कर कोई दूसरा सतकर्म नहीं है। तन–मन–धन से जीव मात्र की सेवा करना ही परमार्थ है। साधु का तो पूरा जीवन ही परमार्थ के लिए समर्पित होता है। अहंकार का त्याग करके भगवान का भजन करना और सबकी सेवा करना यही सच्ची साधुता है।

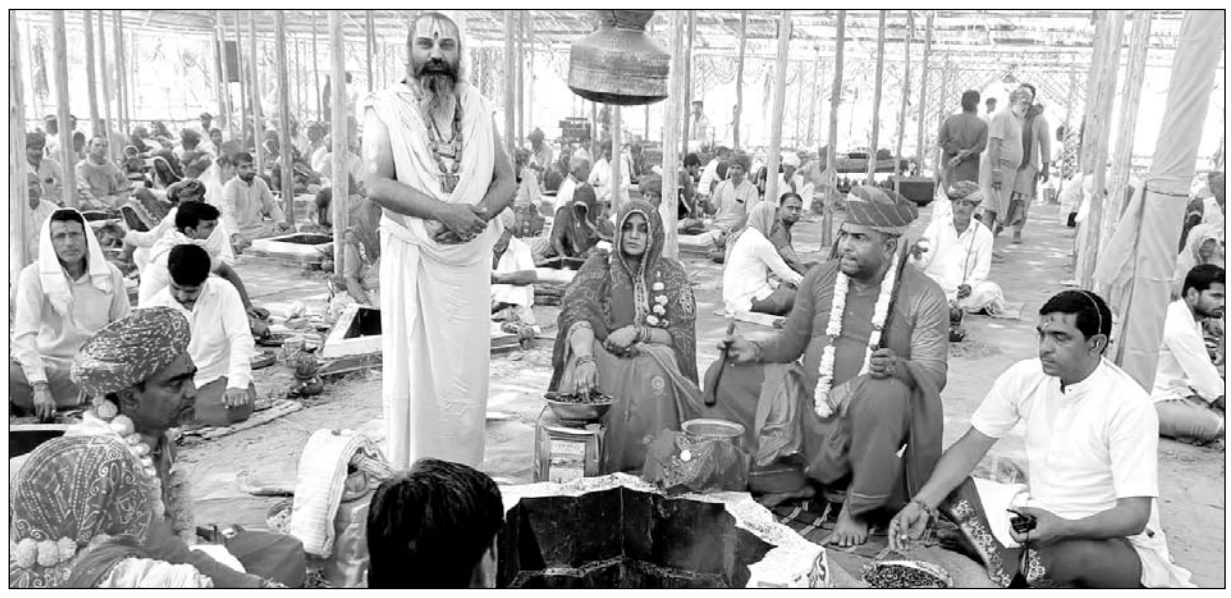

ग्राम रूण्डल स्थित जमदग्नि परशुराम रेणुका आश्रम में सृष्टि के कल्याणार्थ महंत रविदास महाराज के सानिध्य में आयोजित 108 कुण्डीय श्री महालक्ष्मी गणेश महायज्ञ में आहुतियां दी।

श्री महालक्ष्मी गणेश महायज्ञ के दौरान सांय 7 बजे से 10 बजे तक नानी बाई का मायरा कथा का वाचन महंत गणेश महाराज द्वारा किया जा रहा है। कथा के प्रसंग की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि भक्त द्वारा बनाए गए प्रत्येक सम्बंध को भगवान प्रेम से स्वीकार करते हैं और अपने भक्त की सेवा में तत्पर रहतें है। भगवान कृष्ण खाती बनकर आते हैं और नरसी मेहता जी की टूटी हुई गाड़ी को अपने हाथ से सुधारतें है। इस दौरान काफी संख्या में भक्त मौजूद रहे।

संघ, संचलन व सर्वोच्च न्यायालय सत्य की विजय

सर्वोच्च न्यायलय में मिली ऐतिहासिक विजय के बाद गत रविवार को तमिलनाडु के चैन्नई सहित प्रमुख 45 नगरों में आरएसएस के पथ संचलन सम्पन्न हुए। सभी 45 स्थानों पर हज़ारों स्वयंसेवको ने अनुशासित व शांतिपूर्वक तरीके से रुटमार्च किया। मन में स्वभाविक प्रश्न उठता है प्रायः विजयादशमी पर संचलन निकलते हैं यह संचलन का समय नहीं, फिर भी भारत के एक ही राज्य में इस समय इतने अधिक संचलन एक साथ क्यों ?

वास्तव में सर्वोच्च न्यायलय ने अपने एक निर्णय के द्वारा यह घोषणा की है कि संघ के पथ संचलन को तमिलनाडु में प्रतिबंधित करने वाली सभी यचिकाए खारिज की जाती है। इसके साथ ही तमिलनाडु की स्टालिन सरकार की रिट को निरस्त कर मद्रास उच्च न्यायलय के निर्णय को मान्य करते हुए तमिलनाडु में सभी सार्वजनिक मार्गों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को पथसंचलन करने की अनुमति यथावत रखता है।

संघ क्या है ? संचलन क्यों होते हैं? संघ न्यायलय में क्यों गया ? आदि जानने की जिज्ञासा द्रमुक सरकार ने संचलन पर प्रतिबन्ध लगा व वाद को आगे ले जाकर सभी भारत वासियों के मन में जगा दी है।

वैसे तो भारत में लम्बे समय से संचलन की परम्परा रही है। रामायण, महाभारत से लेकर राजाओं की सेनाओं द्वारा संचलन किया जाता था उनकी पदचाप से न केवल वीरता का संचार होता था अपितु अरिदल में भयकंप व्याप्त हो जाता था। संचलन में केवल वेशभूषा की समानता का व एक साथ पंक्तिबद्ध चलने के बाहरी दृश्य का ही महत्व नहीं होता बल्कि संचलन करने वाले प्रत्येक सैनिक का ह्रदय भी आपस में जुड़ जाता है, जो इसकी उपयोगिता को और अधिक गुणवतापूर्ण बनाता है। संचलन गति व दिशा का अद्वितीय संयोजन भी है।

वस्तुतः संघ भारत की सुप्त चेतना जागृत कर, हिन्दुओं को संगठित करने के साथ समाज में जीवन मूल्य स्थापित करने का कार्य गत 98 वर्षों से निरन्तर कर रहा है। संघ के स्वयंसेवकों को समाज में अनुशासन व देशभक्ति से पहचाना जाता है, व्यक्ति में अनुशासन लाने के लिए संघ अनेक गतिविधियाँ चलाता है उनमें से एक महत्वपूर्ण गतिविधि है पथ संचलन।

आज के युग में जब सामने देखते हुए, कंधे से निकलती भुजाएँ, बंद मुट्ठी, बिना घुटना उठाए, एड़ी के बल पैर रखते हुए सीध मिलाकर जब आरएसएस की रणधुन निकालते बैंड के साथ स्वयंसेवक ह्रदय में राष्ट्र भक्ति का भाव लिए देश की एकता व अखण्डता के लिए कदम से कदम मिलाकर साथ–साथ चलते हैं, तो यह दृश्य वास्तव में अद्भुत और मनमोहक होता है।

संघ में प्रारम्भ के समय संचलन

मातृभूमि गान से गूंजता रहे गगन.....जैसे गीत, कोरस, सीटी व एक दो एक की आवाज के साथ होता था, समय के साथ इसमें बैण्ड को भी सम्मलित किया गया। साईड ड्रम की ताल, बैस ड्रम का निनाद, बिगुल की ध्वनि, वंशी का मधुर स्वर व झलरी की झंकार मानो राजपथ पर होने वाली परेड का सा आभासी दृश्य उत्पन्न कर देती है।

संघ की हर यूनिट के इस सालाना आयोजन में विद्यार्थी, कलासाधक, श्रमजीवी, कृषक, व्यापारी, प्रोफेशनर्स, शिक्षाविद अर्थात समाज के प्रत्येक वर्ग, जाति के स्वयंसेवक एवं गृहणियां व युवतियां राष्ट्र सोविका समिति की सेविकाएं सफेद साड़ी अथवा सूट व गुलाबी चुन्नी के साथ संचलन में सहभाग करती हैं।

हिन्दु समाज की संगठित शक्ति का यह प्रर्दशन दुःर्जनो को मर्यादित रहेने व सज्जनों के संरक्षण का अभिवचन है, ऐसे संचलन की समाज को भी उत्सुकता से प्रतीक्षा रहती है। पथ संचलन के मार्गों पर रंगोली निकालना, स्वागत द्वार लगाना व दोनों हाथों से भगवाध्वज पर पुष्पवर्षा करना, मन में सम्मान का भाव लिए भारत माता के जयघोष करना, संघ के समर्थन व सहयोग देने हेतु समाज की तत्परता दर्शाता है।

नए लोग इसे संघ की दशहरा रैली भी कहते हैं, यह विजयदशमी पर होने वाली शक्ति की पूजा का प्रतीक है।

संचलन के महीनो पूर्व शाखाओं पर अभ्यास व आरएसएस ऑफ़िस में ड्रेस लेने वालों की चहल पहल बढ़ जाती है, इस समय बालकों का उत्साह भी देखते ही बनता है। एक ही परिवार की तीन–चार पीढ़ी एक साथ संघ के यूनिफॉर्म में दिखायी देती है कभी–कभी एक या अधिक जिलों का तीन की बजाय चार व छः पंक्तियों में द्विधारा व त्रिवेणी संचलन और अधिक विराट एवं प्रभावकारी दृश्य उत्पन्न करते हैं।

संचलन में चलने वाला आत्मविश्वास से भरा बाँका जवान अपने शीष पर टोपी धारण कर, उन्नत ललाट पर सुशोभित चंदन का लम्बा तिलक, सिंह समान नेत्रों में तेज, आभायुक्त मुखमण्डल, चौड़ा सीना, तनी हुई भुजाएं, सधे कदम से चुनौती को ललकारता, बाधाओं को रोन्धता, आकर्षक रोबीला, जिसे देश धर्म पर नाज है ऐसे स्वयंसेवको के समूहों द्वारा नागरिक अनुशासन की झलक मिलती है।

अतीत में पथ संचलन की समयबद्धता व सेनासम दृश्यों से पराक्रमी सुभाषचंद्र बोस व भारत के प्रथम सेनाध्यक्ष जनरल करिअप्पा भी प्रभावित हुए थे।

संघ स्वयं की नहीं भारत की जय की आकांक्षा रखता है, सच्चा स्वयंसेवक नाम यश की चाह से दूर रहना चाहता है तो भी मीडिया की सजगता व स्नेह से सभी समाचार पत्रों व चैनलों में संचलनों का चित्र व वीजुअल सहित उचित व पर्याप्त स्थान मिलता है परंतु संघ की यह लोकप्रियता, जिसकी न कभी संघ ने चाह की न कभी महिमामंडन की इच्छा रखी।

फिर भी पता नहीं क्यों, संघ द्वारा सहजता पूर्वक चलने वाले व्यक्ति रचना व समाज परिवर्तन के र्काको द्वेष के कारण कुछ लोगों को रास नहीं आता। संभवत ऐसे लोग भारत को ना कभी एक राष्ट्र के रूप में देखने को तैयार थे ना आज हैं। इसलिए अपनी कुंठित मानसिकता व हर विषय को राजनीतिक स्वार्थ के वशीभूत होकर देखते हैं। सत्ता व विधिव्यवस्था के दुरुपयोग द्वारा इस प्रकार की कुत्सित मानसिकता का प्रदर्शन भीकरते रहते हैं। परंतु संघ ने सदैव धैर्य के साथ, संविधान में विश्वास रख, न्यायालय के समक्ष अपना पक्ष दृढ़ता से रखा।

अपनी मर्यादा व परम्परा को ध्यान में रखते हुए इस बार भी तमिलनाडु में संचलन की अनुमति ना मिलने पर संघ ने सेशन से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक न्याया का रास्ता अपनाते हुए हर स्तर पर तानाशाह सरकार को चुनौती दी।

अंततोगत्वा छद्म सेक्युलर सरकार का दम्भ हारा, निरंकुशता सरीखी सता झुकी, संघ सफल हुआ, भारत के विचार की जय हुई, अभारतीय विचार पराजित हुआ।

स्वयंसेवकों को संचलन की अनुमती मिली अनुमान है सत्य की विजय का उत्सव सम्पन्न करने के लिए संघ रुकेगा नहीं बल्कि भारत को विश्वगुरु बनाने तक बढ़ता ही रहेगा।

– शीतल,
युवा लेखिका